समष्टि अर्थशास्त्र [MACRO ECONOMICS]

(MEANING, NATURE, SCOPE, TYPES IMPORTANCE AND LIMITATIONS)

अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

ओस्लो विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री प्रो. रैग्नर फ्रिश (Ragner Frisch) ने सन 1933 में Economics को दो शाखों में बांटा

समष्टि अर्थशास्त्र

(Macroeconomics)

Makros

बड़ा (Large)

व्यष्टि अर्थशास्त्र

(Microeconomics)

Mikros

सूक्ष्म (Small)

मैक्रो शब्द का इतिहास

- सर्वप्रथम इसमें ***आर्थिक विचारक वाणिज्यवादियों*** (mercantilists) ने सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाने पर जोर दिया। उनका विचार था कि एक राष्ट्र को अधिक धन-संपत्ति जोड़कर एक शक्तिशाली राज्य का निर्माण करना चाहिए। यद्यपि वाणिज्यवादियों के अनुसार वर्तमान अर्थव्यवस्था के रूप में मैक्रो अर्थशास्त्र नहीं था, किन्तु उनका दृष्टिकोण समष्टिमुखी (Macro-oriented) था।
- वाणिज्यवाद के पश्चात् ***प्रकृतिवाद*** नामक विचारधारा ने भी मैक्रो अर्थशास्त्र का प्रयोग किया। 18वीं शताब्दी में इस विचारधारा के आर्थिक विचारकों में ***क्यूने (Quesnay)*** ने समाज को तीन वर्गों—उत्पादक वर्ग, भूमिधारी वर्ग और अनुत्पादक वर्ग—में बाँटकर **धन के परिणाम का सिद्धान्त** प्रस्तुत किया जिसे आर्थिक सारणी (Table Economique) के माध्यम से व्यक्त किया। इस प्रकार सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में धन का वितरण समष्टि अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु है।
- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **माल्थस (Malthus)** ने जनसंख्या सिद्धान्त के माध्यम से इस विचारधारा का समर्थन किया।
- **वाणिज्यवादियों (mercantilists) और कार्ल मार्क्स (Karl Marx)** ने भी उत्पादन के आधारों पर आधारित वर्ग विभाजन के माध्यम से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में धन के वितरण पर बल दिया।
- माल्थस को मैक्रो अर्थशास्त्र का अग्रदूत कहा जा सकता है जिन्होंने सामान्य उपभोग का सिद्धान्त प्रस्तुत किया जो आगे चलकर कीन्सियन विचारों की आधारशिला बना। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के रूप में *प्रो. क्लार्क, विक्सेल और इर्विंग फिशर* ने समष्टि अर्थशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किए।
- प्रचलित अर्थशास्त्रियों *गार्डनर और पीगू तथा हेनरी स्टोन रॉबर्टसन* सहित अन्य अर्थशास्त्रियों ने प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् मुद्रा तथा सामान्य कीमतों एवं व्यापार चक्र के सिद्धान्तों के माध्यम से मैक्रो दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया
- किन्तु इसे विकसित करने का वास्तविक श्रेय प्रो. *जे. एम. कीन्स (J. M. Keynes)* को ही है जिन्होंने विश्वव्यापी मंदी के पश्चात् **1936** में प्रकाशित अपनी पुस्तक *General Theory of Employment, Interest and Money* में आय, उत्पादन और रोजगार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण आर्थिक विचार प्रस्तुत किए।

समष्टि अथवा व्यापक अर्थशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(MEANING AND DEFINITIONS OF MACRO ECONOMICS)

अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो किसी एक इकाई का नहीं अपितु सभी इकाइयों के आर्थिक व्यवहार अथवा व्यवहार का अध्ययन करता है।

इसमें अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन, कुल उपभोग, कुल बचत एवं कुल निवेश, राष्ट्रीय आय आदि का अध्ययन किया जाता है।

प्रमुख परिभाषाएँ

(1) प्रो. **बाउल्डिंग (Boulding),** *"व्यापक अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत मात्राओं का अध्ययन नहीं किया जाता बल्कि इन मात्राओं के योग का अध्ययन किया जाता है। इसका तात्पर्य व्यक्तिगत आय से नहीं बल्कि राष्ट्रीय आय से होता है, व्यक्तिगत कीमतों से नहीं, बल्कि सामान्य मूल्य-स्तर से होता है, व्यक्तिगत उत्पादन से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन से होता है।"*

(2) प्रो. **शुल्ज (Prof. Shultz**), "व्यापक अर्थशास्त्र का मुख्य चर राष्ट्रीय आय विश्लेषण करता है।"

(3) प्रो. चेम्बरलिन (Chamberlin), "व्यापक अर्थशास्त्र कुल मात्राओं का अध्ययन करता है।"

समष्टि अर्थशास्त्र क्षेत्र *(SCOPE OF MACRO ECONOMICS)*

(1) आय, उत्पादन तथा रोजगार का सिद्धान्त (Theory of Income, Output and Employment)— *इस सिद्धान्त के अन्तर्गत उपभोग क्रिया व निवेश क्रिया के सिद्धान्त आते हैं। व्यापार चक्र का सिद्धान्त भी इसी से सम्बद्ध किया जाता है।*

(2) कीमतों का सिद्धान्त (Theory of Prices)— *इसमें मुद्रास्फीति, अवस्फीति तथा मूल्यस्तर के उतार-चढ़ाव का अध्ययन किया जाता है।*

(3) आर्थिक विकास का सिद्धान्त (Theory of Economic growth)— *यह सिद्धान्त विकासशील तथा अल्प-विकसित देशों में आय, उत्पादन एवं रोजगार की दीर्घकालीन वृद्धि पर केन्द्रित होता है।*

(4) वितरण का व्यापक सिद्धान्त (Macro Theory of Distribution)— *यह सिद्धान्त कुल राष्ट्रीय आय के मजदूरी एवं लाभ के बीच वितरण का अध्ययन करता है।*

(5) समष्टि आर्थिक नीति (Macro Economic Policy)— *(1) से (4) तक जिन विषयों की चर्चा की गई उनका सम्बन्ध समष्टि आर्थिक सिद्धान्तों (Macro Economic Theories) से है। इन सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देने के लिए आर्थिक नीतियों की आवश्यकता होती है। इन समष्टि आर्थिक नीतियों का अध्ययन भी समष्टि अर्थशास्त्र का एक प्रमुख विषय है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों (Monetary and fiscal Policies) का विश्लेषण किया जाता है।*

समष्टि अर्थशास्त्र के उद्देश्य *(OBJECTIVES OF MACRO ECONOMICS)*

समष्टि अर्थशास्त्र के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं, यथा—

(1) उत्पादन (Output), रोजगार (Employment) एवं आर्थिक विकास (Economic Growth)

सभी बाजार अर्थव्यवस्था में प्रसार एवं संकुचन की स्थिति देखी जा सकती है। इससे कभी-कभी बेरोजगारी की स्थिति भी पायी जाती है। इसलिए समष्टि अर्थशास्त्र का उद्देश्य उत्पादन के स्तर को ऊँचा रखना तथा आर्थिक विकास के उच्च स्तर को प्राप्त करना है।

(2) मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण (Control on Inflation)

मुद्रास्फीति का उच्च स्तर अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक होता है। अतः इसका नियन्त्रण आवश्यक है।

(3) व्यापार चक्र का नियन्त्रण (Control on Business Cycles)

व्यापार चक्र अर्थव्यवस्था की अस्थिरता को दर्शाता है। अतः आर्थिक नीतियों का उद्देश्य स्थिरता (Economic Stability) प्राप्त करना होता है।

समष्टि अर्थशास्त्र के उपकरण (INSTRUMENTS OF MACRO ECONOMICS)

(1) राजकोषीय नीति (Fiscal Policy)

इस नीति के अन्तर्गत सरकार द्वारा कर एवं सार्वजनिक व्यय का उपयोग किया जाता है।

(2) मौद्रिक नीति (Monetary Policy)

मौद्रिक नीति का संचालन केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है। इसके अन्तर्गत मुद्रा आपूर्ति तथा ब्याज दर को नियंत्रित किया जाता है।

(3) आय नीति (Income Policy)

इसके अन्तर्गत सरकार के वे प्रयास शामिल हैं जहाँ मौखिक अनुनय (Verbal Persuasion) या मजदूरी तथा कीमत नियन्त्रण सम्बन्धी कानून के द्वारा मुद्रास्फीति को नियन्त्रित करने का प्रयास करती है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति (International Economic Policy)

वृहद अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार को शामिल किया जाता है। आज कोई भी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था विश्व के अन्य देशों के प्रभाव से पृथक नहीं रह सकती है। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अन्तर्गत व्यापार नीति (Trade Policy), विनिमय दर नीति (Exchange Rate Policy) तथा समष्टि आर्थिक नीतियों का समन्वयन (Co-ordination) शामिल होता है।

समष्टि अर्थशास्त्र के प्रकार *(TYPES OF MACRO ECONOMICS)*

नीचे समष्टि अथवा व्यापक अर्थशास्त्र के प्रकारों का अध्ययन किया गया है—

(1) समष्टि अथवा व्यापक स्थैतिकी (Macro Statics)

यह केवल स्थिर स्थिति में व्यापक चरों (Macro Variables) के सम्बन्धों की व्याख्या करता है। इस कथन को निम्न समीकरण में स्पष्ट किया जाता है—

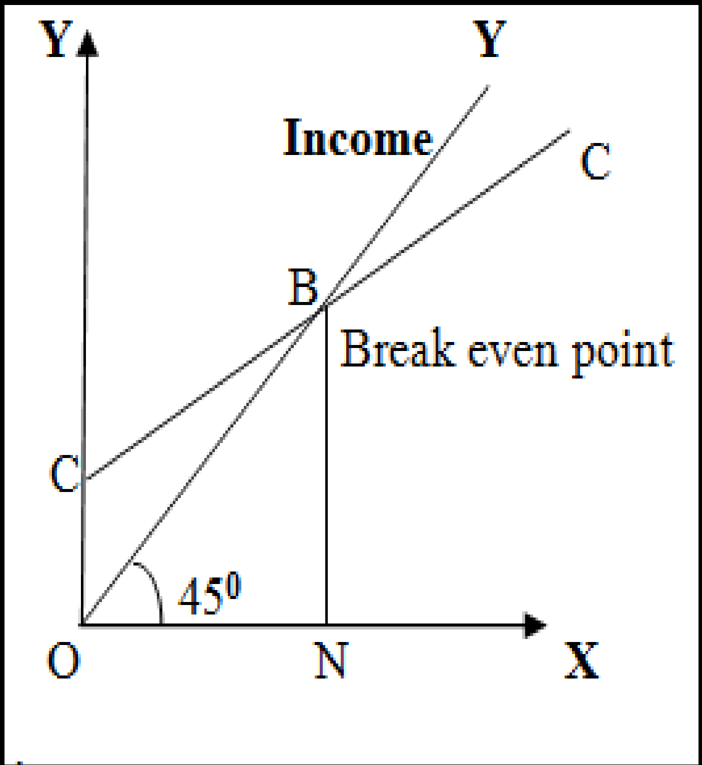

$$YC = C + I$$

Y = समष्टि आय, C = कुल उपभोग व्यय, तथा I = कुल विनियोग

व्यापक स्थैतिकी संतुलन समायोजन (Adjustment) की क्रिया का अध्ययन नहीं करता है, बल्कि यह स्पष्ट करता है कि समाज की *समष्टि आय (Y)* समाज के *कुल उपभोग व्यय व कुल विनियोग (C + I)* के बराबर होती है। यह समीकरण हमें बताता है कि समष्टि आय (Y) को बराबर रखने के लिए समाज का उपभोग व विनियोग (C + I) बराबर होना चाहिए। इस समीकरण का समय विश्लेषण में सम्बन्धित चरों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती है।

(2) तुलनात्मक समष्टि स्थैतिकी (Comparative Macro Statics)

अर्थव्यवस्था में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। परिणामस्वरूप संतुलन बदलता रहता है। तुलनात्मक स्थैतिकी विभिन्न संतुलनों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। इस विशेल्षण के अंतर्गत उपभोग तथा विनियोग आदि सामान्य आर्थिक तत्वों के परिवर्तनों के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले संतुलन अवस्थाओं की तुलना की जाती है।

(3) समष्टि गतिशीलता (Macro Dynamics)

व्यापक अर्थव्यवस्था में गतिशीलता के अन्तर्गत उत्पादन, आय, रोजगार, उपभोग, निवेश आदि में समय के साथ होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ *(CHARACTERISTICS OF MACRO ECONOMICS)*

व्यापक अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

(1) व्यापक दृष्टिकोण

इसका दृष्टिकोण व्यापक है। इसमें 'सूक्ष्म इकाइयों' को महत्व नहीं दिया जाता है।

(2) व्यापक विश्लेषण

व्यापक अर्थशास्त्र में व्यापक विश्लेषण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसमें सरकार की मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

(3) व्यक्ति की अपेक्षा समूह पर बल

व्यापक अर्थशास्त्र में व्यक्ति की अपेक्षा समूह (group) को अधिक महत्व दिया जाता है।

(4) परस्पर निर्भरता

व्यापक अर्थशास्त्र में समष्टि चरों में होने वाले परिवर्तन परस्पर जुड़े होते हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व (IMPORTANCE OF MACRO ECONOMICS)

आर्थिक विश्लेषण की विधि के रूप में समष्टि अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक महत्व को निम्नवत् व्यक्त किया जा सकता है :

(1) आर्थिक नीति के निर्माण में महत्व (Importance in Economic Policy Formulations)—*आज अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, रोजगार नीति, विकास सिद्धान्त, भुगतान शेष, मौद्रिक नीति आदि समष्टि विचारों का अध्ययन व्यापक अर्थशास्त्र में किया जाता है।*

(2) आर्थिक विकास का मापक (Measuring Rod of Economic Development)—*जब कभी हम देश या देश से अधिक देशों के स्तर की तुलना करते हैं, तब यह ठीक है, क्योंकि जीवन-स्तर के स्तर का अध्ययन कर जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे उतने सही नहीं हैं।*

(3) समग्र अध्ययन के लिए उपयोगी (Useful for Micro Study)—*एक फर्म की मजदूरी का निर्धारण एक उद्योग की और एक उद्योग की मजदूरी का निर्धारण अर्थव्यवस्था में मजदूरी की सामान्य स्थिति से प्रभावित होता है। एक वस्तु की कीमत भी बहुत कुछ सामान्य कीमत स्तर से प्रभावित होती है। मुद्रा प्रसार एवं मुद्रा संकुचन की स्थिति में वस्तु का मूल्य घट-बढ़ता है।*

(4) जटिल अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए आवश्यक (Importance in Complex Economy)—*वर्तमान समय में आर्थिक प्रणाली इतनी जटिल हो चुकी है कि आर्थिक तत्त्वों की निर्भरता एक-दूसरे पर बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में समष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन अधिक उपयोगी होता है।*

समष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ (LIMITATIONS OF MACRO ECONOMICS)

समष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ अथवा दोष निम्न हैं :

(1) निष्कर्ष का वास्तविक न होना गलत—प्रायः व्यापक मात्राओं का विश्लेषण कर, भ्रान्त होने वाली नीतियाँ गलत होती हैं। उदाहरण के लिए, सामान्य कीमत सूचकांक को स्थिर देख कर यह कहना गलत है कि कीमत-स्तर स्थिर है।

(2) व्यक्तिगत इकाई को महत्व न देना गलत—समष्टि आर्थिक विश्लेषण में व्यक्तिगत इकाई की अपेक्षा समष्टियों को महत्व दिया जाता है।

(3) समूह के संरचना को महत्व न देना—समष्टि अर्थशास्त्र में समूह के आकार-प्रकार का ही अध्ययन किया जाता है कि यदि रचना का ज्ञान तब तक समूह की बनावट तथा उसके सभी अंगों की सही-सही जानकारी नहीं कर लें, तब तक इस अध्ययन में की जाने वाली भविष्यवाणियाँ (forecasts) मिथ्या होंगी।

(4) सामूहिक मात्राएँ व्यक्तिगत मात्राओं का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर सकतीं—अर्थव्यवस्था का एक समूह अर्थव्यवस्था की विभिन्न शर्तों को प्रभावित नहीं कर सकती है। उदाहरण के लिए, कुछ मांगों में वृद्धि के कारण उत्पादन बढ़ेगा, परन्तु कुछ फर्म ऐसी भी होंगी जिनकी लागत व उत्पादन घट-बढ़ सकता है।

व्यष्टि (सूक्ष्म) तथा समष्टि (व्यापक) प्रणालीयों की परस्पर-निर्भरता (INTER-DEPENDENCE OF THE MICRO AND MACRO ANALYSIS)

सूक्ष्म और व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की दो अलग-अलग नीतियाँ हैं। ये दोनों तार्किक रूप में प्रतियोगी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं-

(1) व्यापक आर्थिक विश्लेषण में सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता—

(i) *सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने तथा उसके सम्बन्धी नीतियों का निर्धारण करने के लिए हम व्यक्तिगत इकाइयों को संक्षेपों का अध्ययन करते हैं।* उदाहरण के लिए, जिस प्रकार व्यक्तिगत ईंटों के समूह बनावट से उसी प्रकार फर्मों के मेल से उद्योग और उद्योगों के मेल से अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है।

(ii) व्यापक आर्थिक विश्लेषण का कार्य सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण के बिना पूरा नहीं होता है, क्योंकि व्यक्तिगत अध्ययन के आधार पर ही सम्पूर्ण अध्ययन कर सकते हैं। प्रो. सेमुअलसन (Prof. Samuelson) के अनुसार, *'वास्तव में सूक्ष्म व व्यापक अध्ययन में परस्पर कोई विरोध नहीं है, ये दोनों अध्ययन आवश्यक हैं। यदि आप एक को समझते हैं और दूसरे के बारे में अनभिज्ञ हैं, तो आप अर्द्धशिक्षित हैं।'*

(iii) *यदि समाज द्वारा वस्तुओं की माँग बढ़ाई जा रही है, तो सामान्यतया यह कहा जाएगा कि फर्म उत्पादन बढ़ाएगी।* परन्तु फर्म की उत्पादन क्षमता बढ़ाने का हेतु ही फर्म की उत्पादन लागत तय होगी। यदि फर्मों के लिए उच्च कीमतों पर गैस उत्पादन को बढ़ाना आसान नहीं होगा।

(2) सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता—

(i) मूल्यः एक व्यक्तिगत उत्पादक के सामने हमेशा यह समस्या होती है कि *वह साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण किस प्रकार करे*। इस समस्या का अध्ययन बिना अर्थशास्त्र में होना विचारणीय नहीं होता है।

(ii) कोई फर्म अपना कितना माल बेचेगी, यह केवल उस फर्म के द्वारा *उत्पादित वस्तु की कीमत पर निर्भर नहीं करेगा, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करेगा कि समाज के नागरिकों की क्रय-शक्ति (Purchasing power) कितनी है*, मूल्य-स्तर कितना ही नीचा क्यों न हो, यदि समाज की आय-स्तर कम है, तो वस्तुओं की बिक्री अधिक नहीं होगी।

(iii) एक फर्म को अपने उत्पादन की मात्रा निश्चित करते समय समाज की सम्पूर्ण माँग, समाज की क्रय-शक्ति, रोजगार-स्तर तथा आय-स्तर जैसी बातों को भी ध्यान में रखना होगा।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि कोई भी फर्म मूल्य, मजदूरी तथा उत्पादन को स्वतन्त्र रूप में निर्धारित नहीं कर सकती है। इस प्रकार विशिष्ट आर्थिक विश्लेषण के कार्यों की पूर्ति के लिए व्यापक आर्थिक विश्लेषण का सहारा लेना पड़ता है।